सपर्या

मेरे गीत

आचार्य महाश्रमण

सपर्या

आचार्य महाश्रमण

© आदर्श साहित्य संघ, नई दिल्ली

सपर्या

लेखक : आचार्य महाश्रमण

सम्पादक : मुनि ऋषभकुमार

प्रकाशक : आदर्श साहित्य संघ
२१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली ११० ००२

संस्करण : सन् २०१३

मूल्य : तीस रुपये मात्र

मुद्रक : पायोराईट प्रिंट मीडिया प्रा. लि., उदयपुर

SAPARYA by Acharya Mahashraman Rs. 30/-

प्रस्तावना

मैं यदा-कदा संगान करता हूं। फिर मैंने समय-समय पर कुछ गीत बनाए हैं। उनके संकलन-संयोजन आदि में मुनि ऋषभकुमारजी और विद्यार्थी मुनि विश्रुतकुमारजी ने निष्ठापूर्ण श्रम किया है।

पूज्य गुरुदेवश्री तुलसी और पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ गुरुद्वय का आध्यात्मिक वरदहस्त मुझ पर बना रहे। मंगलकामना।

आचार्य महाश्रमण

अनुक्रमणिका

१. जीवन मंगलमय हो। ९

२. सत्य के खातिर समर्पित प्राण हैं १०

३. हे प्रभो! तुम ही हमारे नाथ हो ११

४. श्री णमोक्कार का ध्यान करो १२

५. ॐ जय वर्धमान भगवान १३

६. म्हारै मन-मन्दिर में प्रभु महावीर है १४

७. हम करें महावीर की आराधना १५

८. भिक्षु बाबा! लो हमारी वंदना १६

९. श्री भिक्षु स्वामी रो परम प्रताप है १७

१०. जन्मभूमी केलवा में संघ-जन्मोत्सव मनाएं १८

११. तेरापथ अधिराज भिक्षुस्वामी पधारो जी १९

१२. श्री भैक्षव शासन की महिमा अपरम्पार है २०

१३. भिक्षुस्वामीजी! शरण तुम्हारी आया २१

१४. बाबा भिक्षुस्वामी की शुभ स्तवना करते हैं २२

१५. मर्यादा गणनन्दनवन-मन्दार है २३

१६. मर्यादा गण-नन्दनवन मन्दार है २५

१७. भिक्षुगण अनुशास्ता रायचन्द गुरुराज! २७

१८. हृदय बसै गुरुवर माणक गणी २८

१९. करें हम वंदन बारम्बार २९

२०. कालूप्रभु-पादाम्बुज अर्पित भावभीनी वंदना ३१

२१. तेरापथनायक तुलसी गुरुवर का गुरु उपकार है ३२

२२. चित्त में बसिया रे श्री तुलसी गुरुराज ३३
२३. धरूं मैं प्रभु तुलसी का ध्यान ३४
२४. गुरुजी म्हांनै सीख सुणाई जी ३५
२५. गुरुदेव दिवाकर तुलसी को ३६
२६. पथदर्शक गुरुराज तुलसी प्रभुवर प्याराजी ३७
२७. गुरुवर तुलसी श्री चरणों में वन्दन-वन्दन-वन्दन ३८
२८. संघ-सुषमा विकसाएं हम ४०
२९. सन्तो! भैक्षव शासन में नव्य विकास चाहिए ४१
३०. तेरापथ शासन शृंगार ४२
३१. प्रज्ञा-अवतार! शासन शेखर! ४३
३२. गुरुवर! स्वस्थ रहो दिन रात ४४
३३. गुरुवर! म्हांरो स्वीकारो अभिवन्दन श्रद्धाभावां रो ४५
३४. अमृत महोत्सव का अभिनव अवसर आया ४७
३५. सर्वाधिक संयम-सौरभ सुखकार है ४८
३६. पूज्यवर महाप्रज्ञ भगवान ५०
३७. ॐ जय महाप्रज्ञ गुरुदेव ५२
३८. संघ के उन्नायक महाप्रज्ञ गुरुराज ५३
३९. शासन रा सरताज प्यारा गुरुवर म्हारा जी ५४
४०. हम बनें उपासक वर साधक ५५
४१. राग की बद चेतना को छोड़ दो ५६
४२. साधना ही शान्ति का आधार है ५७
४३. जिसका जीवन सद्गुण का भण्डार है ४८
४४. आत्मशुद्धि का खुलता जिससे द्वार है ५९
४५. सत्संगत की महिमा अपरम्पार है ६०
४६. प्रभुवर का जप कर लो ६१
४७. भारत के लोगो! जागो तुम जीवन में संयम अपनाओ ६२
४८. विश्वमैत्री की दिशा में हम कदम आगे बढ़ाएं ६३
४९. मानव-जीवन पाकर तुमने क्या किया ६४

५०. मानव जीवन बीत रहा है ६५
५१. जो अन्तर में ही रमण करे ६६
५२. मुझे तो करना निज कल्याण ६७
५३. श्रेष्ठ बालक वह सुगुण का जो अमित भण्डार है ६८
५४. जिन्दगी सुफल बनाएं हम ६९
५५. मन निर्मलता को प्राप्त करो ७०
५६. साधना में मन लगाना चाहिए ७१
५७. प्रभु ने भजल्यो रे ७२
५८. मुनिवर मधुकर स्वाम ७३
५९. समता री सूरत पन्ना सती सुजान ७४
६०. गण-उपवन री मन्दार साध्वी कमलू जी ७५

१

जीवन मंगलमय हो।
वीतराग प्रभु की स्तवना से सद्गुण-गण संचय हो।।

'धम्मो मंगलमुक्किट्ठं' दशवैकालिक की वाणी।
छोड़ धर्म को पग-पग पर दुःख पाता है यह प्राणी।
संयममय शुभ भावों से आप्लावित विमल हृदय हो।।१।।

प्रामाणिकता सहनशीलता सत्यवादिता मृदुता।
आत्म-नियंत्रण स्वान्त-समीक्षण स्वल्पभाषिता ऋजुता।
शुद्ध चेतनावास-सुवासित चित्त शान्त निर्भय हो।।२।।

भला सभी का हो दुनिया में नित्य भावना भाएं।
छोड़ कषाय-चतुष्क सर्वथा स्थितप्रज्ञ बन जाएं।
नहीं कामना अमल भावना आत्मिक-सुख अक्षय हो।।३।।

लय : नैतिकता की...........

२

सत्य के खातिर समर्पित प्राण है।
सत्य मानव-जिन्दगी में त्राण है।।

सत्य गुरु, भगवान, मालिक, देवता।
सत्य ही अध्यात्म का आधान है।।१।।

सत्य से बढ़कर नहीं कुछ जगत में।
सत्यनिष्ठा सफलता का गान है।।२।।

दुःख को सब दूर करना चाहते।
सत्य पाप-विनाश खातिर बाण है।।३।।

सत्य-श्रद्धा का अमित बल भुवन में।
सत्य-पालन आगमों की आण है।।४।।

झूठ से क्या कष्ट फिर आते नहीं।
सहजता सात्त्विक सुखों की खान है।।५।।

सत्यता की साधना स्वीकार लो।
सन्तपुरुषों का सुखद आह्वान है।।६।।

लय : दिल के अरमां.......

३

हे प्रभो! तुम ही हमारे नाथ हो।
भक्तिभावित भावना में साथ हो।।

दुःख-सुख में तुम सहारा हो प्रभो!
तुम्हीं माता तुम हमारे तात हो।।१।।

दूर तुमसे नहीं होना चाहते।
सदा सहचर तुम हमारे भ्रात हो।।२।।

अर्चना करते तुम्हारी भाव से।
हृदय में बसते सतत दिन रात हो।।३।।

प्राण अर्पण हों तुम्हारे चरण में।
तुम हमारे शीर्ष तुम ही हाथ हो।।४।।

तुमसे बढ़कर है न कोई जगत में।
भाग्य निर्माता तुम्हीं पुरुषार्थ हो।।५।।

लय : दिल के अरमां.......

४

श्री णमोक्कार का ध्यान करो।
तन्मय बनकर गुणगान करो।
निज आत्मा का कल्याण करो।।

प्रभु अर्हत राग-विजेता है।
आध्यात्मिक पथ अधिनेता है।
सर्वज्ञ-वचन का ज्ञान करो।।१।।

हैं सिद्ध अमर अज अविकारी।
शाश्वत आत्मिक सुख अधिकारी।
स्तवना-सरिता में स्नान करो।।२।।

आचार्य महाव्रत के पालक।
सद्धर्म-संघ के संचालक।
निज से निज की पहचान करो।।३।।

हैं उपाध्याय आगम-ज्ञाता।
सद्ज्ञान-प्रदान-प्रवण त्राता।
पापों से निज का त्राण करो।।४।।

मुनि माया-ममता के त्यागी।
गंभीर धीर वर वैरागी।
समता-रस का सब पान करो।।५।।

लय : जय बोलो संघ......

५

ॐ जय वर्धमान भगवान।
त्रिशलानन्दन! त्रायी! करूं सतत प्रणिधान।।

छोड़ी सुख-सुविधा प्रभुवर ने बने अकिंचन संत।
ध्यान-तपस्या करके पाया केवलज्ञान।।१।।

वीतराग! सर्वज्ञ! विभो! तुम सकल विश्वजेता।
तव चरणों में स्वामिन्! बारम्बार प्रणाम।।२।।

रोहिणेय सा चोर भले हो अर्जुन सा हन्ता।
शरण तुम्हारी पाकर पहुंचे सुर-शिव-धाम।।३।।

पतित-सहायक! धर्म विधायक! समता-संगायक!
प्रतिदिन स्थिर मन होकर धरूं तुम्हारा ध्यान।।४।।

लय : आरती

६

म्हारै मन-मन्दिर में प्रभु महावीर है।
खातां-पीतां सोतां-उठतां दीसै इक तसवीर है।।

चंडकोशियो डंक लगायो पिण प्रभु विचलित हुया नहीं।
नाना कष्ट भयंकर आया फिर भी स्थिरता बणी रही।
परम वीर विभु नहीं बण्या दिलगीर है।।१।।

लम्बी-लम्बी तपस्या सागै ध्यान निरन्तर धरता हा।
नश्वर तन रो मोह छोड़कर आत्मरमण नित करता हा।
सूरज निकल्यो आखिर बादल चीर है।।२।।

सोचूं प्रातः आज दिवस में महावीर बणकर रहणो।
सुख-दुख री सारी स्थितियां में समता-धारा में बहणो।
इण चिन्तन स्यूं मनड़ो बणै सुधीर है।।३।।

बो ही दिनड़ो धन्य हुवेला महावीर बण ज्यावांला।
तोड़ शृंखला आठ करम री अजर अमर पद पावांला।
योगनिरोधी पावै भवजल तीर है।।४।।

लय : आने वाले कल की........

७

हम करें महावीर की आराधना।
चित्त में हो प्रस्फुरित शुभ भावना।।

आदमी में आदमी से क्यों घृणा?
एकता की पुष्ट हो सद्‌भावना।।१।।

नशा व्यापक बन रहा है विश्व में,
अणुव्रत-संकल्प की हो साधना।।२।।

दुराग्रह से ग्रस्त मानव-चेतना,
हो अनाग्रह की सतत समुपासना।।३।।

अहिंसा ही ज्ञान का शिव सार है,
स्वयं से ही हो स्वयं पर शासना।।४।।

अर्थ की अनिवार्यता गार्हस्थ्य में,
नीति-निष्ठा की बढ़े प्रतिपालना।।५।।

लय : दिल के अरमां......

८

भिक्षु बाबा! लो हमारी वंदना।
चित्त में हो सद्गुणों की स्पन्दना।।

सत्यनिष्ठा ही तुम्हारा प्राण था।
अभय दृढ़संकल्प की अभिवंदना।।१।।

दिया प्रज्ञालोक तुमने लोक को।
निशा में ज्यों पौर्णमासिक चंदना।।२।।

धर्म पर सबका उचित अधिकार है।
सार्वलौकिक धर्म की अभिव्यंजना।।३।।

साधुता है शुद्ध संयम पालना।
हो तपस्या से तमस् की भंजना।।४।।

लय : दिल के अरमां......

९

श्री भिक्षु स्वामी रो परम प्रताप है।
श्रद्धा-विधियुत नाम समरतां मिटै बहुल संताप है।।

मिलै नहीं जद अन्य सहारो सत्पुरुषां नै याद करां।
दुख-भय री स्थितियां में आस्थासिक्त स्वरां स्यूं नाद करां।
जन-जन रोज जपै जयकारी जाप है।।१।।

सत्य, साम्य रा सजग पुजारी महावीर प्रभु-प्रतिनिधि हा।
आगम पर गहरी निष्ठा, गम्भीर ज्ञान रा जलनिधि हा।
संघ-हृदय में गुरु भीखण री छाप है।।२।।

प्रायः पांच बरस लग नहीं मिल्यो पूरो भोजन-पाणी।
शान्त भाव स्यूं साफ सुणाता जनता ने भगवद् वाणी।
शुद्ध भावना दूर करै सब पाप है।।३।।

सिरियारी प्यारी नगरी में अन्तिम श्वास लियो स्वामी।
क्षण-क्षण आत्म-निरीक्षण कर-कर बणां सभी अन्तर्यामी।
भक्ति-शक्ति स्यूं हटै सहज अभिशाप है।।४।।

लय : आने वाले कल की.....

१०

जन्मभूमी केलवा में संघ-जन्मोत्सव मनाएं।
भिक्षुबाबा चरण युग में पुष्प श्रद्धा के चढ़ाएं।।

दीर्घजीवी गण बने यह, साधनाजीवी रहे यह।
कृश कषायों को बनाकर चित्त को निर्मल बनाएं।।१।।

मिला हमको जैनशासन, देवदुर्लभ भिक्षुशासन।
एक गुरु का पूतशासन भाग्य हम अपना सराहें।।२।।

आत्मनिष्ठा, संघनिष्ठा, प्रखरतर आचारनिष्ठा।
अनुगमन गुरुदृष्टि का हो, नियमनिष्ठा को बढ़ाएं।।३।।

भारमल ऋषिराय जयवर, मघव माणक डाल गणिवर।
वन्दना कालूचरण में देव तुलसी को बधाएं।।४।।

महाप्रज्ञवर गण प्रशास्ता गुरुदशक पर पूर्ण आस्था
महाप्रज्ञवर गण प्रशास्ता महाश्रमण की पूर्ण आस्था
संघ चरणों में समर्पित स्वान्त की शुभ भावनाएं।।५।।

लय : भावभीनी वन्दना भगवान..........

संदर्भ : तेरापंथ स्थापना दिवस
केलवा, आषाढ़ी पूर्णिमा सं. २०६८

११

तेरापथ अधिराज भिक्षुस्वामी पधारो जी।
है मनमन्दिर तैयार गुरुवर आप पधारो जी।
आप पधारो दरस दिराओ, श्रद्धामय मनुहार।।

जन्म हुआ कंटालिय पुर में बगड़ी में संन्यास।
नगर केलवा अभिनव दीक्षा, सिरियारी सुरवास।।१।।

अनुकम्पा का गहन विवेचन दिखलाता नव पन्थ।
तन्मयतायुत हम पढ़ पाएं, स्वामीजी के ग्रन्थ।।२।।

आज्ञा अनुशासन, मर्यादा तेरापथ का प्राण।
नन्दनवनसम भैक्षवशासन देता हमको त्राण।।३।।

बोधिस्थल में बोधिदिवस का वर कार्यक्रम आज।
राजनगर में बोधिदिवस का वर कार्यक्रम आज।
महाश्रमण सम्पूर्ण समर्पण गण खातिर गणराज!।।४।।

लय : मांड

संदर्भ : आचार्य भिक्षु बोधि दिवस
राजनगर, आषाढ़ शुक्ला १३ सं. २०६८

१२

श्री भैक्षव शासन की महिमा अपरम्पार है।
दीपानन्दन क्रम[१] में वन्दन बारम्बार है।।

आगम सागर का मंथन कर तात्त्विक रत्नों को पाया।
तत्त्वज्ञान ग्रन्थ रचना कर जिन वाङ्मय को विकसाया।
श्रुताभ्यास भरता श्रुतदेवी का भण्डार है।।१।।

शुद्ध पले आचार संघ में निष्ठा साध्वाचार में।
आत्मा में हो निष्ठा पावन निष्ठा शुद्ध विचार में।
आध्यात्मिक निष्ठा ही संयम का आधार है।।२।।

अनुशासन की आवश्यकता प्रभुवर ने पहचानी थी।
मर्यादा निष्ठा की महिमा सद्गुरुवर ने मानी थी।
'निज पर शासन फिर अनुशासन' शुभ संस्कार है।।३।।

एक सुगुरु की आज्ञा श्री तेरापथ गण का प्राण है।
'महाश्रमण' गुरु[२] मर्यादाएं गण उपवन का त्राण है।
श्री भिक्षु स्वामी का हम पर वर उपकार है।
आज नगर सरदारशहर स्मृति में गुलजार है।।४।।

लय : अणुव्रत है सोया संसार जगाने के लिए.......

संदर्भ : आचार्य भिक्षु चरमोत्सव
सरदारशहर, भाद्रपद शुक्ला १३, वि.सं. २०६७

१. चरण २. आचार्य भिक्षु की

१३

भिक्षुस्वामीजी! शरण तुम्हारी आया।
अन्तर्यामीजी! सतत तुम्हारी छाया।।

धन्य हुई यह धरा केलवा तुम-सा सद्गुरु पाकर।
तव अनुकूल बना मन्दिर में यक्षराज खुद आकर।।१।।

अनुशासन का पाठ पढ़ाया सिखलाई मर्यादा।
गुणवत्तायुत गण हो संख्या थोड़ी हो या ज्यादा।।२।।

रहें सभी निश्चिन्त संघ में एक सुगुरु का साया।
ऋजुतामय हो सबका मानस नहीं कहीं भी माया।।३।।

सिरियारी का महामुनीश्वर लगता प्यारा-प्यारा।
जिनशासन का क्रान्तिपुरुषवर पावन नयन सितारा।।४।।

प्रभुवर का चरमोत्सव आज मनाएं भक्त हृदय हो।
तेरापथ की जन्मभूमि में संघपुरुष की जय हो।।५।।

तुलसी गुरुवर महाप्रज्ञ का वरदहस्त जो पाया।
'महाश्रमण' भैक्षवगण खातिर अर्पित मन वच काया।।६।।

लय : पालय पालय............

संदर्भ : आचार्य भिक्षु चरमोत्सव
केलवा, भाद्रपद शुक्ला १३ सं. २०६८

१४

बाबा भिक्षुस्वामी की शुभ स्तवना करते हैं।
जीवन-गौरव-गाथा को श्रद्धा से स्मरते हैं।।

आध्यात्मिक तेज तुम्हारा, किस कारण से निखरा?
इन्द्रियनिग्रह-आराधक, वर वर्चस् वरते हैं।।१।।

वर्षों तक स्वामीजी ने घनघोर विरोध सहा।
चोटें सहकर ही हीरे हर बार निखरते हैं।।२।।

निर्ग्रन्थ भाव से जो की, ग्रन्थों की संरचना।
पावन ज्ञानामृत झरने, उसमें से झरते हैं।।३।।

सिरियारी में विभुवर ने अनशन स्वीकार किया।
संयम से 'महाश्रमण' सब, भवसागर तरते हैं।।
जसवल में चरम महोत्सव श्री भिक्षु उतरते हैं।।
जसवल में चित्तपटल पर श्री भिक्षु उभरते हैं।।४।।

लय : प्रभु पार्श्वदेव चरणों में.........

संदर्भ : २१०वें आचार्य भिक्षु चरमोत्सव
जसोल, प्र. भाद्रपद शुक्ला १३, सं. २०६९

१५

मर्यादा गणनन्दनवन-मन्दार है।
संघ-सुरक्षा-कवच सुपावन वांछित फलदातार है।।

आत्मशुद्धि के परम लक्ष्य से अभिनिष्क्रमण किया हमने।
आत्मोदय की तीव्र भावना से भावित हों सब सपने।
आत्मा की निष्ठा से आत्मोद्धार है।।१।।

आत्म-साधना के विकास में संघ सबल आलम्बन है।
अपुनर्भव पहुंचाने वाला आनन्दप्रद स्यन्दन[१] है।
'गण मेरा, मैं गण का' शुभ उद्‌गार है।।२।।

आज्ञा-निष्ठा युवा. जीत की मंगलमय आदर्श है।
सहज समर्पण से हो जाता उसका पावन स्पर्श है।
गुरु आणा तेरापथ का आधार है।।३।।

प्रवचन-कलाकुशलता साहित्यिक लेखन सम्मान्य हैं।
ये सब तुष हैं, चारित्रिक उज्ज्वलता पोषक धान्य है।
आत्मविशोधक शुद्धाचार विचार है।।४।।

धर्मसंघ में मर्यादाओं का समुचित सम्मान हो।
निर्मल पथ पर आगे बढ़ना हम सबका अरमान हो।
तुलसी गुरु को वन्दन बारम्बार है।
महाप्रज्ञ को वन्दन बारम्बार है।।५।।

प्रथम महोत्सव नवाचार्य का राजलदेसर शोभित है।
क्रीड़ांगण का मनहर प्रांगण जन-जन का मन पुलकित है।
स्वामीजी का 'महाश्रमण' उपकार है।
जयाचार्य का 'महाश्रमण' उपकार है।।६।।

लय : आने वाले कल की......

संदर्भ : १४७वां मर्यादा महोत्सव
राजलदेसर, माघ शुक्ला ७, सं. २०६७

---

१. रथ

१६

मर्यादा गण-नन्दनवन मन्दार है।
श्री जिनशासन सन्तो! सतियो! हम सबका आधार है।
भैक्षव शासन सन्तो! सतियो! हम सबका आधार है।।

आत्म साधना लक्ष्य हमारा सदा पुष्टतम बना रहे।
'एगप्पमुहे' बनकर चेतन निर्मलता से सना रहे।
शुद्ध निर्जराभाव साधना सार है।।१।।

संघ हमारा संरक्षक उपकारी त्राण शरणदाता।
आध्यात्मिक पथदर्शक सम्प्रेरक कष्टातप से छाता।
धर्मसंघनिष्ठा पावन उपहार है।।२।।

आज्ञा रक्षाकवच हमारा पूर्ण समर्पण आणा पर।
किंचित् कष्ट झेलकर भी गुरुआज्ञा पालन रहे प्रवर।
आज्ञानिष्ठा शासन का शृंगार है।।३।।

प्रतनुकषाय बनें हम सारे, निश्चित ही यह श्रेयस्कर।
रहे विमलता आचरणों में जन्म-जन्म में क्षेमंकर।
धन्य साधु वह शुभ जिसका आचार है।।४।।

मर्यादा पालन में जागरूकता सबका धर्म है।
श्री भिक्षु स्वामी के शासन में अनुशासन मर्म है।
मर्यादोत्सव की सर्वत्र बहार है।
वर आमेट नगर लगता गुलजार है।
महाश्रमण गुरुवचन निभा निर्भार है।
अब जल्दी ही मरुधर ओर विहार है।
अब जल्दी ही जसवल ओर विहार है।।५।।

जसवल से गुरुवर तुलसी आमेट नगर में पधराए।
हम आमेट नगर से अब जसवल जाने को उत्साहे।
'महाश्रमण' तुलसी से जुड़ता तार है।
महाप्रज्ञ गुरु का मुझ पर उपकार है।।६।।

लय : आने वाले कल की.....

संदर्भ : १४८वां मर्यादा महोत्सव
आमेट, माघ शुक्ला ७ सं. २०६८

१७

भिक्षुगण अनुशास्ता रायचन्द गुरुराज!
तीसरे अधिशास्ता! तुम पर हमको नाज।
धन्य हुआ प्रभु! धर्मशासन पा तुम-सा गणराज।।

रावलिया में जन्म प्रभु का रावलिया संन्यास।
रावलिया में श्वास अंतिम, सुमिरण होता आज।।१।।

दो-दो गुरुओं से भरा था अनुभव का भण्डार।
प्रवचन के फरमान में तो करते घन ओगाज।।२।।

बक्शीशें करवा रहे हो खुले हाथ महाराज!
चोटी तेरे हाथ में है जीतमल्ल युवराज!।।३।।

रावलिया के ही लिए हम आए सेराप्रांत।
'महाश्रमण' श्रद्धाप्रणत प्रभु! तेरापंथ समाज।।४।।

लय : आपणै भागां री.............

संदर्भ : आचार्य रायचन्दजी स्मृति
रावलिया खुर्द, फाल्गुन कृष्णा १२ सं. २०६८

१८

हृदय बसै गुरुवर माणक गणी।
माणक गणी संघ-मुकुट-मणी।।

जयपुर में जन्म लीन्हो जौहरी परिवार में।
सतरह वरसां में संयम गण-पारावार में।
तीन वरसां बाद में ही बण्या अग्रणी।।१।।

उणपच्चासै श्री मघवा रे पाट विराज्या।
पांच वर्ष शासना में प्रभुवर गाज्या।
उज्ज्वल आभामंडल मानो पूनम चांदणी।।२।।

कार्तिक कृष्णा तीज रात चौपन री आई।
ग्यारह बजे री बेला बिल्कुल अणचाही।
स्वर्गां सिधारया षष्ठ शासनधणी।।३।।

मालीविहीन बण्यो नन्दनवन संघ है।
भाग्यशाली भिक्षु-गण मुनि कालु संग है।
कसौटी पर खरा उतर्‌या संत श्रमणी।।४।।

लय : सजग बनो.....

संदर्भ : आचार्य माणकगणी निर्वाण शताब्दी
गंगाशहर, कार्तिक कृष्णा ३ सं. २०५४

१९

करें हम वंदन बारम्बार।
श्री डालिम गुरुदेव! तुम्हारी महिमा अपरम्पार।।

भाग्यवती उज्जयिनी नगरी।
गौरवमय इतिहास सहचरी।
नर रत्नों से शोभित गगरी।
जहां प्रसूत हुए गुरुवर! तुम निरुपम दिव्य दीदार।।१ ।।

हीरामुनि का पावन साया।
इन्द्रपुरी[१] की मनहर छाया।
दीक्षित होकर मन हरसाया।
जयाचार्य गणिवर चरणों में अर्पित नव उपहार।।२ ।।

चतुर दुर्ग[२] के चतुर्मास में।
जकड़े माणक व्याधि पाश में।
रहे दीर्घ आयुष्य आस में।
स्वर्ग सिधारे यौवन वय में बिन सौंपे अधिकार।।३ ।।

मनोनयन मुनि कालू[३] द्वारा।
उतरा कठिनाई का पारा।
संघ भक्ति का गजब नजारा।
संकट के उस विकट समय में तुम्हीं बने आधार।।४ ।।

कच्छदेश के तुम उन्नायक।
पदयात्राएं बनीं प्रभावक।
ऋषि अमरसी तव गुणगायक।
वीरचंद भाई भी भावित भक्त बना गुरु धार।।५।।

तेजस्वी तेरा अनुशासन।
वर्चस्वी तेरा संभाषण।
बना यशस्वी भैक्षव शासन।
सहज तपस्वी जीवन वन में प्रशम पवन संचार।।६।।

स्वर्ग शताब्दी सावन आया।
महाश्रमण मन मोर लुभाया।
शहर लाडनूं गुरु मन भाया।
महाप्रज्ञ मुनिपति सन्निधि में जैन विभा[४] गुलजार।।७।।

लय : प्रभो! यह तेरापंथ महान्.....

संदर्भ : आचार्य डालगणी निर्वाण शताब्दी
लाडनूं भाद्रपद शुक्ला १२, सं. २०६६

१. इन्दौर २. सुजानगढ़ ३. मुनि कालू 'रेलमगरा' ४. जैन विश्व भारती

२०

कालूप्रभु-पादाम्बुज अर्पित भावभीनी वंदना।
म्हारै मनड़ै में उमड़ै भक्ति-विभूषित स्पन्दना।।

डालिम गणिवर परख निकाल्यो शासन रत्न अमोलो।
चमक्या तेरापथ अम्बर में ज्यूं शारद चन्दना।।१।।

संस्कृत भाषा ऊंची जैनागम-कुंची कहलाई।
मघवा गुरुवर री सीख पाई हृदय-स्पर्शना।।२।।

आचारी ऋजु सन्तां ऊपर वत्सलता बरसाता।
करता उच्छृंखल वृत्तियां पर समुचित तर्जना।।३।।

तुलसी, महाप्रज्ञ आचारज देन थांरी संघ ने।
दो-दो युगप्रधान वरदान खातिर गण-अभिवंदना।।४।।

तिलक-शताब्दी जैन वि.भा. परिसर में आज मनावां।
शिखरारोहण कर पावां महाश्रमण शुभ व्यंजना।।५।।

लय : वन में देख्या है दोय वनवासी.....

संदर्भ : आचार्य कालूगणी पदारोहण शताब्दी
लाडनूं, भाद्रपद शुक्ला पूर्णिमा, वि.सं. २०६६

२१

तेरापथनायक तुलसी गुरुवर का गुरु उपकार है।
सुखशान्तिप्रदायक वदनानन्दन जन-मन आधार है।।

मानव-मानव में संयम का शुभ संस्कार जगाया।
पतितों दलितों स्खलितों को भी अपने गले लगाया।।१।।

सम्प्रदाय है गौण धर्म की ध्वजा सदा लहराए।
नर की नर से घृणा कभी-भी नहीं पनपने पाए।।२।।

लम्बी-लम्बी पदयात्रा कर जनसम्पर्क बढ़ाया।
वत्सलता बरसा प्रभुवर ने गीत प्रेम का गाया।।३।।

जैनागमवाङ्मयसम्पादन-शोध बना श्रेयस्कर।
शीतलता देता पाठक को ज्यों रजनी में शशधर।।४।।

बना अणुव्रत का आन्दोलन जनताहित क्षेमंकर।
'महाश्रमण' दुनिया में चमके ज्यों नभ में वर भास्कर।।५।।

लय : समता रा सागर..........

संदर्भ : गुरुदेव तुलसी, ९वां जन्मदिवस
जसोल, कार्तिक शुक्ला द्वितीया, सं. २०६९

२२

चित्त में बसिया रे श्री तुलसी गुरुराज।
हृदय में रमिया रे तेरापथ सरताज।
बां हाथां पलिया पुस्या ओ म्हानैं म्हां पर नाज।।

इकसठ बरसां तक दिराई गण नै खूब खुराक।
छोड़ अचानक ही सिधार्‌या विस्मित सकल समाज।।१।।

पश्चिम रात्री में कराता सन्तां नें स्वाध्याय।
प्रवचन री फरमावणी में करता सिंह ओगाज।।२।।

गण में नव-निर्माण खातिर प्रचुर कियो आयास।
शक्ति-सम्प्रेषण कराओ सरज्या वांछित काज।।३।।

उन्नति रे शिखरां चढ़ां अब ओ द्यो आशीर्वाद।
महाप्रज्ञ चरणां मुदित मन मोद मनावां आज।।४।।

लय : आपणै भागां री......

संदर्भ : गुरुदेव तुलसी महाप्रयाण
गंगाशहर, आषाढ़ कृष्णा ३ सं. २०५४

२३

धरूं मैं प्रभु तुलसी का ध्यान।
तन्मय दत्तचित्त तन्मूर्तिक, गाऊं गुणगणगान।।

वत्सलता की मधुर कहानी।
मन हो जाता पानी-पानी।
अल्पज्ञानी या सुज्ञानी।
करुणामृत बरसा करवाते, संयम का सन्धान।।१।।

पौरुष में थी गहरी निष्ठा।
श्रम को तुमसे मिली प्रतिष्ठा।
स्वावलम्बिता केन्द्रित आस्था।
क्षुधाविजय निद्राजय द्वारा दिया विपुल अवदान।।२।।

निज पर शासन फिर अनुशासन।
मृदुता-दृढ़तापूर्ण प्रशासन।
स्वाध्यायप्रियता का दर्शन।
अध्यापन ने तुमसे पाया गौरवमय सम्मान।।३।।

कामविजय की सौरभ पाएं।
आगमवाणी को सरसाएं।
सहज समर्पण को अपनाएं।
आत्मरमण कर पाएं ऐसा विभुवर दो वरदान।।४।।

लय : प्रभो! यह तेरापंथ महान्

संदर्भ : गुरुदेव तुलसी द्वितीय मासिक पुण्यतिथि
गंगाशहर, भाद्रपद कृष्णा ३, सं. २०५४

२४

गुरुजी म्हांनै सीख सुणाई जी।

वत्सलता री वृष्टि स्यूं, मेट्यो मन रो ताप।
अनुशासन री यष्टि स्यूं, दूर भगायो पाप।।१।।

ईर्या समिति में सजग, रहो सदा दिन-रात।
मन्द-मन्द गति चालणों, रुककर करणी बात।।२।।

सोच-सोच कर बोलणो, एक-एक वच तोल।
प्रामाणिकता राखणी, नहिं राईभर पोल।।३।।

गण में स्थिर पद रोपणा, जाओ चाहे प्राण।
निष्ठा स्यूं आराधणी, आचार्जां री आण।।४।।

सन्तां सीखो तत्त्व नैं, म्हे नहिं रहस्यां रोज।
आगम री स्वाध्याय स्यूं, खूब करो नव खोज।।५।।

रखणी सेवाभावना, विनयभाव रै साथ।
निर्भयता दिल में भरो, स्वयं बणो निजनाथ।।६।।

गंगा में युवराज पद, गंगा में गणराज।
गंगा में तन नैं तज्यो, तेरापथ-सरताज।।७।।

लय : जगत सपनै री

संदर्भ : गुरुदेव तुलसी तृतीय मासिक पुण्यतिथि
गंगाशहर, आश्विन कृष्णा ३ सं. २०५४

२५

गुरुदेव दिवाकर तुलसी को, श्रद्धायुत स्मृति में लाएं हम।
सुन्दर शिक्षा-सन्देशों से, जीवन का पोषण पाएं हम।।

अर्जन के साथ विसर्जन हो, अति निज-संग्रह का वर्जन हो।
संयम सौरभ से मानस की, बगिया को खुद महकाएं हम।।१।।

प्रामाणिकता पर आस्था हो, सुखमय नैतिक हर रास्ता हो।
है सम्प्रदाय से धर्म जुदा, आध्यात्मिक पाठ पढ़ाएं हम।।२।।

जैनों में सहज समन्वय हो, सापेक्षवाद-विधि अक्षय हो।
प्रेक्षा के प्रवर प्रयोगों से, प्रभुता को सतत जगाएं हम।।३।।

गहराई से सोचें समझें चिन्ता, भय, क्रोध, जलन तज दें।
चिन्तन, निर्णय, कार्यान्विति की दूरी को दूर भगाएं हम।।४।।

लय : महावीर! तुम्हारे.....

संदर्भ : गुरुदेव तुलसी चतुर्थ मासिक पुण्य तिथि
गंगाशहर, कार्तिक कृष्णा ३, सं. २०५४

२६

पथदर्शक गुरुराज तुलसी प्रभुवर प्याराजी।
तेरापथ सरताज तुलसी मोहनगाराजी।
मोहनगारा हार हियारा जिनशासन श्रृंगार।।

कालू गुरु रा पावन पटधर भैक्षव गण रा नाथ।
थांरां चेला म्हें विभुवरजी दीज्यो म्हांनै साथ।।१।।

प्रेक्षाध्यान अणुव्रत उज्ज्वल वर जीवन विज्ञान।
आगम सम्पादन मनभावन उपशोभन अवदान।।२।।

गंगापुर में पद आचारज गंगापुर युवराज।
गंगाणै में छोड़ पधार्‌या म्हां सबनै गणराज।।३।।

महाश्रमण पद आप्यो मुझनै वत्सलता-विश्वास।
'महाश्रमण' सुविनत गुरुचरणां पचपदरा सोल्लास।।४।।

लय : मांड

संदर्भ : गुरुदेव तुलसी १५वां महाप्रयाण दिवस
पचपदरा, आषाढ़ कृष्णा ३, सं. २०६९

२७

गुरुवर तुलसी श्री चरणों में वन्दन-वन्दन-वन्दन।

भाद्रव शुक्ला नवमी शुभ दिन।
गणगादी पर शोभे ज्यों जिन।
उपकार किए जग पर अनगिन।
श्रद्धा स्मृति से होता मानस स्पन्दन-स्पन्दन-स्पन्दन।।१।।

जन-जन नैतिकता अपनाए।
संयम की निष्ठा छा जाए।
मानव मंगल मैत्री पाए।
सत् सौरभ फैलाता अणुव्रत चन्दन-चन्दन-चन्दन।।२।।

अनुशासन की शैली देखी।
वत्सलता गुड़ भेली पेखी।
निर्णायक शक्ति विपुल लेखी।
सहला कर मेटा दुःखित मन क्रन्दन-क्रन्दन-क्रन्दन।।३।।

मुझको गण में आगे लाया।
महाप्रज्ञ सहायक फरमाया।
पद महाश्रमण दे विकसाया।
गुरुयुग का यह अनुपम अभिनव चिन्तन-चिन्तन-चिन्तन।।४।।

सब उन्नति पथ पर सदा बढ़ें।
आध्यात्मिकता के शिखर चढ़ें।
वर 'महाश्रमण' इतिहास गढ़ें।
श्रुत लोचन में पसरे आगम अंजन-अंजन-अंजन।।५।।

लय : उतरो तम पथ पर ज्योति चरण उतरो.....

संदर्भ : विकास महोत्सव
सरदारशहर, भाद्रपद शुक्ला ९, सं. २०६७

२८

संघ-सुषमा विकसाएं हम।।
शिव संकल्प सुकार्यों द्वारा मंजिल पाएं हम।।

आत्म साधना का विकास हो प्रथम लक्ष्य सुखदायी।
गायन, भाषण विविध विधाओं में हो फिर सुघड़ाई।
समता के साधक बन उपशम पाठ पढ़ाएं हम।।१।।

'मैं शासन का शासन मेरा' शुभ सम्बन्ध हमारा।
शासन की समुचित सेवा हित अर्पित जीवन सारा।
संघ परम उपकारी गौरव-गीत सुनाएं हम।।२।।

युवाचार्यवर जीतमल्लजी हैं आदर्श हमारे।
गुरु-इंगित पा बीदासर से बीकानेर पधारे।
गुरुआज्ञानिष्ठा का निर्मल भाव दिखाएं हम।।३।।

मर्यादा-आचारनिपुणता सुन्दरतर आभूषण।
ध्यान, सूत्र-स्वाध्याय दूर करता भावात्मक दूषण।
त्याग-प्रेरणा द्वारा जनजागरणा लाएं हम।।४।।

ग्राम केलवा पुण्य धरा यह जहां हुआ गण-उद्‌भव।
'महाश्रमण' भैक्षवशासन का भव्य विकास महोत्सव।
तुलसी महाप्रज्ञ करुणा से आज मनाएं हम।।५।।

लय : जवाहरलाल बनेंगे हम ....

संदर्भ : विकास महोत्सव
केलवा, भाद्रपद शुक्ला ९ सं. २०६८

२९

सन्तो! भैक्षव शासन में नव्य विकास चाहिए।
सतियो! भैक्षव शासन में भव्य विकास चाहिए।
अमल आश्वास चाहिए।।
विमल विश्वास चाहिए।।

आगम स्वाध्याय करें हम, श्रुत से अज्ञान हरें हम।
जीवन में सम्यक्ज्ञान प्रकाश चाहिए।।१।।

शासन भण्डार भरें हम, शतदीक्षा लक्ष्य वरें हम।
श्रमणी-मुनियों का पुष्ट प्रयास चाहिए।।२।।

विकसित हो आत्मसाधना, निर्मल हो संघ शासना।
तेजस्वी तेरापथ संन्यास चाहिए।।३।।

तुलसी महाप्रज्ञ प्रभुवर, जिनशासन है क्षेमंकर।
श्रद्धामय 'महाश्रमण' उच्छ्वास चाहिए।।
जसवल का यशःपूर्ण इतिहास चाहिए।।४।।

लय : यह है जगने की बेला..........

संदर्भ : विकास महोत्सव
जसोल, प्र. भाद्रपद शुकला ९, सं. २०६९

३०

तेरापथ शासन शृंगार, आध्यात्मिकता के अवतार।
गुरुवर! आज बधाई लो।
गण की शान बढ़ाई जो।।

आगम सम्पादन से तुमने जग को दिया प्रकाश,
प्रेक्षाध्यान प्रयोगों द्वारा प्रगटा दिव्य उजास।
होता मानस का प्रणिधान।
उपशम भावों का संधान।।१।।

विद्या-विषयों में संयोजित हुआ नया आयाम,
शिक्षा संस्थानों में चलता वर जीवनविज्ञान।
भावी पीढ़ी का निर्माण।
मिलता मानवता को त्राण।।२।।

प्रवचन से जनता ने पाया जीवन का पाथेय,
शुभ भावों से संयुत वाणी बन जाती आदेय।
प्रभु के वचन बड़े अनमोल।
महिमामण्डित तात्त्विक बोल।।३।।

युगप्रधान आचार्यप्रवर का आज किया अभिषेक,
भाग्योदय से पाया हमने यह अभिनव अभिलेख।
भैक्षव शासन में उल्लास।
महाश्रमण गण में उल्लास।
गरिमापूर्ण बना इतिहास।।४।।

लय : नीले घोड़े रा असवार......

संदर्भ : आचार्य महाप्रज्ञ युगप्रधान पदाभिषेक
दिल्ली, भाद्रपद शुक्ला ९, सं. २०५६

३१

प्रज्ञा-अवतार! शासन शेखर! लो शत-शत वन्दन।
मैत्री-मन्दार! बांटो आध्यात्मिक मलयज चन्दन।।

प्रवचन की प्रभा निराली, वाणी गूंजे हर डाली।
पहुंची साहित्य-सरिता, ह्यूस्टन न्यूजर्सी लंदन।।१।।

आगम-संपादन द्वारा, वाङ्मय का रूप निखारा।
श्रुत की समुपासना से, उपकृत आह्लादित जन-मन।।२।।

समता का पाठ पहला, दुनिया का मानस बदला।
जीवन-विज्ञान प्रेक्षा थेरापी तोड़े बंधन।।३।।

शासन की शान बढ़ाई, देती हर दिशा बधाई।
संयम निष्ठा से भावित, हम सब हों बालू-नंदन।।४।।

जन्मोत्सव मंगल क्षण में, जागृत उत्साह गण में।
'जीवेयुः शत वर्षाणि' हम सबका लो अभिनंदन।।५।।

लय : मंगल है आज तेरे.....

संदर्भ : आचार्य महाप्रज्ञ जन्म दिवस
छापर, आषाढ़ कृष्णा १३, सं. २०५८

३२

गुरुवर! स्वस्थ रहो दिन रात।
प्रभुवर! मस्त रहो दिन रात।
विभुवर! व्यस्त रहो दिन रात।।
रोग, वातप्रकोपपीड़ा मुक्त हो शुभ गात।।

ऋणी तेरापंथ शासन किया अतुल उपकार।
ध्यान, विद्या से बनाया संघ को प्रख्यात।।१।।

जैन वाङ्मय को बनाया हृष्ट-पुष्ट अभीष्ट।
समय-सरिता-स्नान द्वारा सब बने अवदात।।२।।

क्लिष्ट मानव को दिखाया शांति का सन्मार्ग।
सहज करुणासिक्त साया, बनें जन-जन त्रात।।३।।

संघनिष्ठा, त्यागनिष्ठा, ध्येयनिष्ठा युक्त।
भिक्षुशासन सम्पदा से बने जग विख्यात।।४।।

लय : नहीं इसो दूसरो महावीर......

संदर्भ : आचार्य महाप्रज्ञ जन्मदिवस
जयपुर, आषाढ़ कृष्णा १३, सं. २०६५

३३

गुरुवर! म्हांरो स्वीकारो अभिवन्दन श्रद्धाभावां रो।
हृदयवलय में लयमय गूंजे विभुवर! थांरो जयनारो।।

तेरापथ-दस आचार्यां में पहलो पद पायो प्रभुवर।
संयमपर्यव परिपालन में उज्ज्वल स्थल पायो ऋषिवर।
दीर्घकाल तक पावां अवसर श्रीचरणां री सेवा रो।।१।।
हृदयवलय में.........

कालजयी युगपुरुष महर्षे! मानुष मानस कलुष हर्‌यो।
निर्मल चिंतन-दर्शन स्यूं जन-मन में परिवर्तन कर्‌यो।
खूब बढ़ायो गणगौरव सतपथ दिखलायो प्रेक्षा रो।।२।।
हृदयवलय में.........

आगमधर मुनिप्रवर बणै श्रमणीवर श्रुतधर कहलावै।
शिक्षण और प्रशिक्षण द्वारा गणनन्दनवन महकावै।
संस्कृत प्राकृत वाङ्मय द्वारा द्वार खुल्यो बहुश्रुतता रो।।३।।
हृदयवलय में.........

सन्त सत्यां अरु समण समणियां स्वस्थ निरामय सदा रहै।
भावात्मक परिवर्तन द्वारा आधि उपाधि स्यूं दूर रहै।
'ज्ञाता-द्रष्टा' पाठ पढ़ाकर पथ प्रकटायो प्रभुता रो।।४।।
हृदयवलय में.........

भैक्षवशासन प्रौन्नति खातिर वर आशीर्वच बगसाओ।
आध्यात्मिक-वैज्ञानिकता रो रस नस-नस में प्रसराओ।
'महाश्रमण' नव इतिहासां रो महाप्रज्ञ गुरु बरतारो।।५।।
हृदयवलय में.........

लय : चांद सी महबूबा.......

संदर्भ : कालजयी महर्षि अभिवंदना
मुंबई, माघ शुक्ला पूर्णिमा, सं. २०५९

३४

अमृत महोत्सव का अभिनव अवसर आया।
संयम जीवन का शुभ इतिहास सुहाया।।

महायज्ञ प्रज्ञा का पावन कुशल प्रशिक्षण अनुपम।
महाप्रज्ञ गणिवर सन्निधि में लाभ उठाएं गुरुतम।
गण नन्दनवन में, नव चन्दन महकाया।।१।।

भाव विशुद्धि रहे कण-कण में क्षण-क्षण सफल बनाएं।
मंत्र श्वास को साथ मिलाकर निर्मलता को पाएं।
सतत संतता का उन्नत पथ दरसाया।।२।।

सहनशीलता, सहज नम्रता, सेवाभाव-प्रतिष्ठा।
लक्ष्य समर्पण, अन्तस्तर्पण, गुरु में गहरी निष्ठा।
श्रम, सम, उपशममय जीवन क्रम मन भाया।।३।।

योगक्षेम वर्ष में करना चित्तसमाधि-विवर्धन।
'महाश्रमण' गुरुवर स्वीकारो सकल संघ का अर्चन।
पावन प्रांगण में जन-जन मन हरसाया।।४।।

लय : पालय पालय रे......

संदर्भ : प्रज्ञा महायज्ञ समारोह
लाडनूं, माघ शुक्ला १०, सं. २०६१

३५

सर्वाधिक संयम-सौरभ सुखकार है।
नन्दनवन में महाप्रज्ञ मंगलदायक मन्दार है।।

भैक्षवशासन श्रमण-संघ को एक नया अवदान मिला।
दीक्षा-पर्यव कीर्तिमान का गुरुतम गुलशन आज खिला।
वर्धापन-अभिनन्दन गण-उपहार है।।१।।

'कुम्भे परिमितमम्भः पीतः कुम्भोद्भवेन जलराशिः।
अतिरिच्यते सुजन्मा कश्चिज्जनकं निजेन चरितेन'।
कविवर का यह श्लोक बना साकार है।।२।।

मेरे से भी काम सवाया महाप्रज्ञ कर पाएंगे।
सत्य अहिंसा का पावन पथ मानव को दिखलाएंगे।
कृतकृत्य बना गुरु तुलसी का उद्गार है।।३।।

साधुयुगल की पूत प्रेरणा से अंतर्वैराग्य जगा।
सांसारिक ममता-मूर्च्छा का दुःखद भीषण भूत भगा।
मुनि छबीलजी स्वामी का आभार है।।
मूलचन्दजी स्वामी का आभार है।।४।।

कालूगणिवर के कर कमलों से सन्तत्व सुखद पाया।
अन्तःप्रज्ञा, समिति-गुप्ति से उसको प्रभु ने महकाया।
सरदारशहर की धरा बनी गुलजार है।।५।।

भिक्षु समाधि स्थल सिरियारी में सुन्दर अवसर आया।
शिखर पुरुष की शिखर साधना से जन-जन मन विकसाया।
'महाश्रमण' जिनशासन की जयकार है।।६।।

लय : आने वाले कल की......

संदर्भ : आचार्य महाप्रज्ञ संयम पर्याय कीर्तिमान अभिवंदना
सिरियारी, श्रावण शुक्ला ३, सं. २०६१

३६

पूज्यवर महाप्रज्ञ भगवान।
तव चरणों में सतत समर्पित श्रद्धामय सम्मान।।

कितनों पर उपकार तुम्हारा।
भक्तों की आंखों का तारा।
सहृदयता की अविरल धारा।
दुःखित जगवत्सल विभुवर तुम करुणारत्ननिधान।।१।।

मृदु समुचित पथदर्शन करते।
आगन्तुक की पीड़ा हरते।
शोकाकुल में सम्बल भरते।
धरते हस्तकमल शिष्यों पर देते विद्या दान।।२।।

चिन्तन में चातुर्य खरा था।
वाणी में माधुर्य धरा था।
प्रवचन में गाम्भीर्य भरा था।
कैसेटों में रखा सुरक्षित सुन सकते मतिमान।।३।।

आर्हतवाङ्मय अनुसन्धायक।
सम्पादक अनुवादक वाचक।
तुलनात्मक टिप्पण व्याख्यायक।
जिनशासन की शान, प्रभावक आगम-अनुसंधान।।४।।

जैन योग के पुनरुद्धारक।
प्रेक्षाध्यान विधा संधारक।
मैत्री नैतिक मूल्य प्रचारक।
शिक्षण संस्थानों में प्रचलित वर जीवन विज्ञान।
किया अहिंसा यात्रा द्वारा जन-जन का कल्याण।।५।।

कालू गुरुवर के व्याख्याता।
तुलसी प्रभु से गहरा नाता।
महाश्रमण के हो तुम त्राता।
शास्ता श्री भैक्षव शासन के, गाएं गौरव गान।।६।।

नब्बे वर्षों का शुभ जीवन।
वत्सलता का शोभन उपवन।
'महाश्रमण' पावन संजीवन।
गण को संरक्षित कर गुरु ने किया महाप्रस्थान।।७।।

लय : निहारा तुमको कितनी बार......

संदर्भ : आचार्य महाप्रज्ञ महाप्रयाण
सरदारशहर, द्वि. वैशाख कृष्णा ११, सं. २०६७

३७

ॐ जय महाप्रज्ञ गुरुदेव।
भक्ति सुधा अभिसिंचित मानस तरु स्वयमेव।।

जन्म लिया टमकोर गांव में बालूजी माता।
चोरड़िया कुल उत्तम तोलाराम पिता।।१।।

पुर सरदारशहर में कालू गुरुवर से।
संयम रत्न अमोलक पाया मुख-कर[१] से।।२।।

गण युवराज बनाया तुलसी प्रभुवर ने।
राजलदेसर नगरी माघ महोत्सव में।।३।।

पद आचार्य विलक्षण विभुवर ने पाया।
चतुरदुर्ग[२] भूमी पर जनमन हरसाया।।
दिल्ली महानगर में जनमन हरसाया।।४।।

युगप्रधान आचार्य विभूषण धर्मसंघ द्वारा।
टोहाणा, दिल्ली में चमका गणतारा।।५।।

दीक्षास्थल सरदारशहर में चतुर्मास खातिर।
किया प्रवेश सुखद पर काल हुआ हाजिर।।६।।

गोठीजी की पुण्य हवेली अंतिम श्वास लिया।
वर सरदारशहर में महाप्रयाण किया।।७।।

लय : आरती

संदर्भ : आचार्य महाप्रज्ञ प्रथम मासिकी पुण्यतिथि
सरदारशहर, ज्येष्ठ कृष्णा ११, सं. २०६७

१. मुंह से उच्चारण व हाथ से केशलोच २. सुजानगढ़

३८

संघ के उन्नायक महाप्रज्ञ गुरुराज।
सत्य के सन्धायक तेरापथ सरताज।
प्रथम वार्षिकी पुण्यतिथि पर श्रद्धा-प्रणत समाज।।

वत्सलतामय शासना से की शासन-सम्भाल।
करुणामय व्यवहार में प्रभु छिपा शान्ति का राज।।१।।

श्रुतदेवी आराधना में किया प्रचुर पुरुषार्थ।
ज्ञानार्णव गम्भीरता पर भैक्षव गण को नाज।।२।।

दिया खुला आकाश मुझको भरने खूब उड़ान।
उपकारों का स्मरण करता 'महाश्रमण' गणिराज!।।३।।

अन्तर्मन में रम रहा सरदारशहर का सन्त।
अन्तर्मन में रम रहा टमकोर ग्राम का सन्त।
गांव मजेरा हो रहा है पुलकित शोभित आज।।४।।

लय : आपणै भागां री ....

संदर्भ : आचार्य महाप्रज्ञ प्रथम वार्षिकी पुण्यतिथि
मजेरा, वैशाख कृष्णा ११ सं. २०६८

३९

शासन रा सरताज प्यारा गुरुवर म्हारा जी।
तेरापथ अधिराज दसवां गणिवर म्हारा जी।
म्हारा गुरुवर प्यारा गणिवर थांनै समरां आज।।
प्यारा गुरुवर म्हारा जी।।

'यात्रा तो अब महाश्रमण री म्हारो तो सहयोग।'
श्रीमुख स्यूं फरमाता प्रभुवर वत्सलता संयोग।।१।।

जैनागम-सम्पादन शोभन गरिमामय आयास।
जिनवाङ्मय री आब बढ़ाई अभिनव चरणन्यास।।२।।

ध्यानप्रणाली खोजी निराली प्रेक्षाध्यान महान।
योग जगत में महिमा पाई क्षेमंकर अवदान।।३।।

पुर सरदारशहर में विभुवर कालधरम नै प्राप्त।
किरपा राखीज्यो म्हां सब पर, करज्यो विघन समाप्त।।४।।

महाप्रज्ञ शास्ता रो पायो भैक्षवशासन स्हाझ।
श्रद्धानत गुरुचरणां मांहे 'महाश्रमण' गणराज।।५।।

लय : मांड

संदर्भ : आचार्य महाप्रज्ञ द्वितीय वार्षिकी पुण्यतिथि
मेली, वैशाख कृष्णा ११ सं. २०६९

४०

हम बनें उपासक वर साधक शासन की सेवा में तत्पर।
संयम-तप की तरणी द्वारा तर जाएं भवसागर दुस्तर।।

द्वादश व्रत जीवन का भूषण मिट जाए अन्तर्मन दूषण।
धार्मिक तिथियों में आराधित कर पाएं 'प्रतिपौषध' संवर।।१।।

करुणा-मैत्री-समता भावित व्यवहार सभी के साथ करें।
जन-जन का मन हम जीत सकें वाणी में सहज मधुरता भर।।२।।

मार्दव जीवन श्रृंगार बने ऋजुतामय शुभ आचार बने।
संतोष-क्षमा के सुमनों पर मंडराए कोमल मन मधुकर।।३।।

सम्भाषण में कौशल अर्जित लेखननैपुण्य बने प्रकटित।
हो दत्तचित्त हम करें सदा जिनवाणी का स्वाध्याय प्रवर।।४।।

गुरु, देव, धर्म में दृढ़आस्था निर्वाण नगर का शुभ रास्ता।
रत्नत्रय के आराधन से हम सब बन जाएं अजर-अमर।।५।।

लय : महावीर प्रभु के चरणों में......

संदर्भ : उपासक प्रशिक्षण शिविर
जयपुर, सं. २०६५

४१

राग की बद चेतना को छोड़ दो।
धर्म से निज चित्त को तुम जोड़ दो।।

दुःख का उत्पत्ति-कारण मोह है।
भावना ममकार की अब मोड़ दो।।१।।

मोह राजा आठ कर्मों में प्रखर।
लोभ की दृढ़ शृंखला को तोड़ दो।।२।।

ब्रह्मचर्य पवित्रता की साधना।
वासना के पापघट को फोड़ दो।।३।।

सब सुखों की खान है नीरागता।
आत्म-लय की साधना पर जोर दो।।४।।

लय : दिल के अरमां.....

४२

साधना ही शान्ति का आधार है।
योगविरहित जिन्दगी बेकार है।।

दूसरों के दोष ही जन देखते।
क्या नहीं खुद दोष के भंडार हैं?।।१।।

भोग ही क्या आदमी का लक्ष्य है।
त्याग से हर व्यक्ति का उद्धार है।।२।।

नहीं इच्छा अन्त को पाती कभी।
स्पृहानल में जल रहा संसार है।।३।।

जिनको अपना मानकर आश्वस्त थे।
आज उनमें शत्रुता साकार है।।४।।

दूसरों की देख उन्नति क्यों जलें।
भावना मुदिता मधुर उपहार है।।५।।

शान्त निःस्पृह सन्त जन रहते सदा।
सतत समता सन्तता का सार है।।६।।

लय : दिल के अरमां.....

४३

जिसका जीवन सद्गुण का भण्डार है।
महापुरुष कहलाने का उस मानव को अधिकार है।।

प्राणों की बलि देकर भी जो सत्य-सुरक्षा करता है।
संघर्षों के तूफानों से नहीं कभी जो डरता है।
परम तत्त्व से जिस नरवर का प्यार है।।१।।

औरों को पीड़ित करना निज को पीड़ित करना माने।
समदर्शी बन हर प्राणी को आत्मतुल्य जो पहचाने।
अनुकम्पा नर जीवन का शृंगार है।।२।।

निश्छलतामय भावों से जो सबके साथ करे व्यवहार।
जग की माया-ममता तजकर निर्मल जो रखता आचार।
ऋजुता से खुलता प्रभुता का द्वार है।।३।।

सुख-दुःख की घटनाओं में जो नहीं संतुलन को खोता।
प्रतिपल शुभ योगों के द्वारा पाप-पंक को जो धोता।
नमन हमारा उसको बारम्बार है।।४।।

लय : आने वाले कल......

४४

आत्मशुद्धि का खुलता जिससे द्वार है।
वही धर्म है सारभूत, बाकी समझो निस्सार है।।

मन्दिर में तो रोज गया पर रही कामना हरदम साथ।
हाथ न आया कुछ भी उससे व्यर्थ गया सारा पुरुषार्थ।
जहां कामना दुःख वहां तैयार है।।१।।

घण्टों-घण्टों भजन किया पर हुआ न प्रभु से साक्षात्कार।
किया गहन ज्ञानार्जन फिर भी हुआ न भीतर सुख-संचार।
शान्ति-प्राप्ति में बाधक विकृत विचार है।।२।।

संन्यासी का वेश लिया पर ग्रन्थि-विमोचन किया नहीं।
औरों को उपदेश दिया पर स्वयं आचरण किया नहीं।
आदर्शों पर चलना प्रभु से प्यार है।।३।।

अभय, अहिंसा, करुणा, मैत्री, सत्य-तत्त्व की जिज्ञासा।
विनयशीलता, आत्मसमर्पण, साहस, सहज मधुर भाषा।
शुद्ध सन्तता के ये गुण आधार हैं।।४।।

लय : आने वाले कल......

४५

सत्संगत की महिमा अपरम्पार है।
हर मानव के लिए खुले ये संतजनों के द्वार हैं।।

गंगा में डुबकी लेने वाला करता तन को निर्मल।
साधु-संग-सरिता में रमने वाला करता मन निर्मल।
सम्यक् दर्शन महानन्द-आधार है।।१।।

सुनकर मुनियों की शिक्षाएं जीवन में जो धारता।
डग-मग करती नैया को वह मानुष पार उतारता।
संयम से मिलता सुख का भंडार है।।२।।

चोरी-जारी झूठ-कपट में ही जो सदा निरत रहता।
औरों को पीड़ित करने में जिसका जीवन-बल बहता।
इन्सान नहीं वह भूस्पृक् भू पर भार है।।३।।

कनक-कामिनी के परिहर्ता महापुरुष जो होते हैं।
पावन वचनामृत द्वारा वे जन-मन का मल धोते हैं।
परमपुरुष का हर प्राणी से प्यार है।।४।।

लय : आने वाले कल....

४६

प्रभुवर का जप कर लो।
सद्गुण-मुक्ताओं से जीवन-झोली को तुम भर लो।।

जो भी आता इस दुनिया में निश्चित ही वह जाता।
किए हुए निज पुण्य-पाप का समुचित फल भी पाता।
'जैसी करणी वैसी भरणी', वाणी मन में धर लो।।१।।

नहीं तुम्हारे साथ चलेगी रत्तीभर भी माया।
फिर क्यों नश्वर चकाचौंध में तेरा मन भरमाया।
सन्तोषी नर सदा सुखी है, दुःखाम्बुधि को तर लो।।२।।

दुर्लभ इस मानव-जीवन को क्यों तुम व्यर्थ गंवाते?
व्यसनों के विष दरिये में पड़ अनगिन गोते खाते?
सुनकर सद्गुरु की शिक्षाएं दुर्गुण-तम को हर लो।।३।।

लय : नैतिकता की.......

४७

भारत के लोगो! जागो तुम जीवन में संयम अपनाओ।
निष्णात बनो नैतिकता में पावनता बगिया विकसाओ।।

यदि राजनीति में निपुण बनो तो प्रामाणिक बन कर रहना।
मदिरावित्ताधारित मत लेने का प्रयास तुम मत करना।
चारित्रिक मूल्यों को स्थापित कर गीत विजय के तुम गाओ।।१।।

यदि व्यापारी तुम बनते हो तो सच्चाई को मत तजना।
बेमेल मिलावट कर देवानुप्रिय! ग्राहक को मत छलना।
साधन की निर्मलता रखकर विश्वासपात्र तुम बन जाओ।।२।।

विद्यार्थी, शिक्षक और चिकित्सक अधिकारी तुम बनते हो।
विधिवेत्ता अधिवक्ता नौकर जिस किसी क्षेत्र में रहते हो।
सर्वत्र सर्वदा और सर्वथा अणुव्रती तुम रह पाओ।।३।।

भौतिक उन्नति भी आवश्यक पर आध्यात्मिक गति भी करना।
नैतिकता निष्ठा पुष्ट बना अच्छा मानव बनकर रहना।
मानव जीवन में 'महाश्रमण' तुम सदाचरण को सरसाओ।।४।।

लय : भगवान तुम्हारे अन्दर है...........

४८

विश्वमैत्री की दिशा में हम कदम आगे बढ़ाएं।
शांति की सरिता बहाकर, एकता के गीत गाएं।।

नम्रता हो धन हमारा, अभयमय जीवन हमारा।
मित्रता की भावना से घृणा की ज्वाला बुझाएं।।१।।

हो सदा व्यवहार नैतिक, धर्मयुत हो कर्म दैनिक।
बन स्वयं करुणापुजारी हृदय में समता सजाएं।।२।।

चित्त में जागे अहिंसा, भाव में आगे अहिंसा।
बन्धुतामय लय सुनाकर वलय हिंसा का गिराएं।।३।।

क्षमा वीरों का विभूषण, क्रोध भावात्मक प्रदूषण।
साधना अभ्यास द्वारा संतुलन की लौ जलाएं।।४।।

काम वांछा पर नियंत्रण सहज सुख को है निमंत्रण।
अर्थ मूर्च्छित चेतना पर धर्म का अंकुश लगाएं।।५।।

लय : भावभीनी वंदना......

४९

मानव-जीवन पाकर तुमने क्या किया।
खाने, पीने, सोने में ही सारा समय गवां दिया।।

खेलकूद में लाड-प्यार में बचपन तेरा पूर्ण हुआ।
विषय-वासना अहंकार के मद में यौवन जीर्ण हुआ।
तुच्छ जरा ने मन-पंकज को म्लान किया।।१।।

उपन्यास तो बहुत पढ़े पर किया न सत्साहित्य-पठन।
तरह-तरह के पिक्चर देखे किया न निज जीवन-दर्शन।
काम-भोग के विष शरबत का पान किया।।२।।

संतों की संगत तो मार्ग भूलकर ही तुम करते हो।
सदाचार के राजमार्ग पर भी तुम कभी न चलते हो।
प्रेक्षाध्यान साधना में रस ना लिया।।३।।

आशापूरण देवी ने तो दोनों को वरदान किया।
एक मित्र ने भरी पोटली दूजे ने आराम किया।
अवसर खोने वाले ने अनुताप किया।।४।।

लय : आने वाले कल की.....

५०

मानव जीवन बीत रहा है भैय्या करना हो सो कर लो।
संवर तप की नैय्या द्वारा भैय्या भव सागर को तर लो।।

पर-निन्दा विकथा प्रमाद में क्यों तुम समय गंवाते।
शास्त्र पठन तात्त्विक चर्चा से ज्ञान खजाना भर लो।।१।।

श्वास-श्वास के साथ जोड़ दो इष्ट मंत्र के पद को।
अजपाजप के द्वारा अन्तस्थित क्लेशों को हर लो।।२।।

मौन शस्त्र की बहुत जरूरत संयम समरांगण में।
सहज मधुरता निश्छलता से वाक्पटुता को वर लो।।३।।

चिन्तन बहुत जरूरी चिन्तन की सीमा आवश्यक।
काय-गुप्ति के द्वारा आध्यात्मिक पथ को अनुसर लो।।४।।

लय : दुनिया राम नाम नहीं जाण्यो.....

५१

जो अन्तर में ही रमण करे, वह सन्त पुरुष कहलाता है।
जो भीतर में ही भ्रमण करे, वह सन्त पुरुष कहलाता है।।

कथनी-करनी जिसकी सम हो, भावों में मृदुता उपशम हो।
अनमोला अवसर आने पर, जो बलिदानी बन जाता है।।१।।

जो अप्रतिबद्ध विहारी हो, निष्काम साधनाकारी हो।
जो सतत सहजता में रहता, छलना जिसको न सुहाता है।२।।

निन्दा हो चाहे स्तवना हो, जीना हो चाहे मरना हो।
सुख-दुख की सारी स्थितियों में, जो स्थितप्रज्ञ बन जाता है।।३।।

संयम-पोषण के खातिर ही, साधक का खाना-पीना है।
रसना-भगिनी को वश में कर, जो स्वाद-विजय कर पाता है।।४।।

चिन्तन में जिसके समता हो, वाणी में मृदुल मधुरता हो।
आचरणों में संयम झलके, वह श्रद्धास्पद बन जाता है।।५।।

लय : जिसके दिल में हरि नाम.....

५२

मुझे तो करना निज कल्याण।
मुझे तो करना जन-कल्याण।
दुनिया मुझको कैसा समझती, क्यों देना यह ध्यान।।

औरों के कहने से कोई, बनता नहीं महान।
मैं कैसा हूं इसका सच्चा, व्यक्ति स्वयं प्रमाण।।१।।

दुर्जन के कहने से छोटा, होता नहीं इन्सान।
मेरी आत्मा ही मेरी यह, चिन्तन शान्ति-निधान।।२।।

'यह मेरा यह तेरा' करती, आत्मा का नुकसान।
अच्छे को भी बुरा बताते, कुछ मानव नादान।।३।।

निन्दा होती या स्तवनाएं, इससे मैं बेभान।
दृढ़संकल्पी मानव करता, मुश्किल को आसान।।४।।

लय : साधक के बाधक......

५३

श्रेष्ठ बालक वह सुगुण का जो अमित भण्डार है।
मस्त अपने आप में, जिसका पठन से प्यार है।।

पाठ अपना याद करता, नियत बेला में सदा।
साथियों के साथ जिसका, मृदु मधुर-व्यवहार है।।१।।

गुरुजनों की डांट को, स्वीकारता जो शांत मन।
धवल चद्दर की तरह, जिसका विमल आचार है।।२।।

बुरे बच्चों की न संगत, छात्र जो करता कभी।
सहज संयत वृत्तियों का, हृदय में संचार है।।३।।

नहीं केवल पुस्तकों से, ज्ञान का अर्जन करे।
ज्ञान के अनुरूप जिसके, उच्च स्वच्छ-विचार हैं।।४।।

लय : प्रेम से बोलो कि.....

५४

जिन्दगी सुफल बनाएं हम।
विद्या-विनय-विवेक सुमंगल दीप जलाएं हम।।

नशा दुर्दशा करने वाला, इससे सदा बचेंगे।
धूम्रपान, मदिरासेवन की लत में नहीं फसेंगे।
संयम की शैली अपना कर कदम बढ़ाएं हम।।१।।

सत्यवादिता मानव जीवन का सुन्दर आभूषण।
अन्तर्मन में झूठ और चोरी के रहें न दूषण।
नैतिकता का शंखनाद कर शक्ति जगाएं हम।।२।।

पर्यावरण-प्रदूषण के हम कारण नहीं बनेंगे।
हरे-भरे वृक्षों का प्रोन्मूलन हम नहीं करेंगे।
उपभोक्ता संस्कृति को छोड़ सादगी लाएं हम।।३।।

नहीं कभी भी अनपेक्षित हिंसा को प्रश्रय देंगे।
सभी प्राणियों साथ सुमैत्री का हम भाव रखेंगे।
दया भगवती के चरणों में शीष नमाएं हम।।४।।

श्रम को अपना बन्धु बनाकर उद्यमशील रहेंगे।
प्रगतिशत्रु आलस्य भाव को निशदिन दूर रखेंगे।
आत्मविजेता बनकर जय-संगीत गाएं हम।।५।।

लय : जवाहरलाल बनेंगे हम......

५५

मन निर्मलता को प्राप्त करो आनंद तुम्हें मिल जाएगा।
समता सरिता में स्नान करो जीवन उपवन खिल जाएगा।।

जब अहंकार पर चोट लगे आक्रोश भाव आ जाता है।
आवेश जनित व्यवहार भूत अन्तर सुख को खा जाता है।
क्रोधोपशमन के द्वारा मानव अतुल शान्ति पा जाएगा।।१।।

जीवन के खातिर धन होता क्या धन के खातिर जीवन है।
तन के खातिर भोजन होता क्या भोजन खातिर यह तन है।
प्रामाणिकता की रक्षा से नर पुरुषरत्न कहलाएगा।।२।।

क्यों नशाखोर होकर खोता मानुष खुद अपने गौरव को।
तन शक्ति-नाश कर क्यों धोता वह अपने अर्जित वैभव को।
संयममय जीवन-शैली से आनन्द अनोखा पाएगा।।३।।

विकलेन्द्रिय जीव भरे जग में हम सब पंचेन्द्रिय बन पाए।
हो सदुपयोग इन्द्रिय गण का यह चिन्तन सहज समा जाए।
कर करण-विजय आत्मा आत्मा से आत्मा में रम जाएगा।।४।।

लय : भगवान तुम्हारे अन्दर.....

५६

साधना में मन लगाना चाहिए।
सुप्त चेतन को जगाना चाहिए।।

क्यों सताए क्रोध का आवेश अब।
सहज समता को सजाना चाहिए।।१।।

हम नहीं अभिमान करना चाहते।
मार्दवोत्सव को मनाना चाहिए।।२।।

वंचना मन को बनाती है मलिन।
सरलता से पेश आना चाहिए।।३।।

लोभ सर्वविनाशकारी जगत में।
काम पर कंट्रोल करना चाहिए।।४।।

क्यों करें ईर्ष्या किसी से भी कभी।
भावना मुदिता हृदय में चाहिए।।५।।

क्यों करें स्वाध्याय में आलस्य हम।
ध्यान को शुभ धन बनाना चाहिए।।६।।

विमल भावों को उभारें हम सभी।
दुष्ट भावों को भगाना चाहिए।।७।।

लय : दिल के अरमां.....

५७

प्रभु ने भजल्यो रे।
राग रोष रा भाव छोड़कर भवसागर ने तरल्यो रे।।

अनुकंपा री शुद्ध भावना बार-बार थे भावो रे।
विमल अहिंसा व्रत अपनाओ घृणा भावना हरल्यो रे।।१।।

माया छलना तजकर भाया! सहज सरल बण ज्यावो रे।
सत्य साधना द्वारा मन वच निर्मल करल्यो रे।।२।।

अप्रामाणिकता चोरी जग में दुर्गुण कहलावै रे।
अस्तेयव्रत द्वारा संकट मोचन वरल्यो रे।।३।।

अति भोगेच्छा कारण मानव दर-दर भटका खावै रे।
शुभ स्वदार संतोष सदाव्रत मन में धरल्यो रे।।४।।

लोभ पाप रो मूल जगत में बुधजन साफ बतावै रे।
कर इच्छा परिमाण, विसर्जन दिल में भरल्यो रे।।५।।

लय : प्रभु को भजिए......

५८

मुनिवर मधुकर स्वाम गण में गौरव पाया जी।
कविवर मन अभिराम गुरुवर रे मन भाया जी।।

संघ परामर्शक संबोधन गुरु तुलसी मुख उक्त।
महाप्रज्ञ गुरु दत्त विभूषण शासनगौरव युक्त।।१।।

खूब करी गुरुवर री सेवा अर्पित तन मन प्राण।
गुरु सेवा ने जप-तप मान्यो निज कर्त्तव्य सुजाण।।२।।

नवदीक्षित सन्तां री सेवा विपुल करी दिनरात।
सुसंस्कार भर्‍या जीवन में कांई बताऊं बात।।३।।

मृदुतामय व्यवहार कुशलता आकर्षण रो केन्द्र।
हंसतो-खिलतो गमतो चेहरो ज्यूं शारद रो चन्द्र।।४।।

स्थितप्रज्ञ रह करो निरंतर शांतसुधारस पान।
'महाश्रमण' मंगल आशंसामय म्हारो संगान।।५।।

लय : मांड

संदर्भ : शासनगौरव मुनिश्री मधुकरजी के प्रति
जयपुर, सं. २०६५

५९

समता री सूरत पन्ना सती सुजान।
मृदुता री मूरत मनमोहक मतिमान।
निर्मल तप स्यूं खूब बढ़ाई भैक्षव गण री शान।।ध्रुव।।

आकर्षण रो कारण जग में सेवाभाव प्रकाम।
छोटा-मोटा काम काज में करता निज श्रमदान।।१।।

क्रोध तपस्या रो सहचारी दुनियां में आ बात।
शासन गौरव में देख्यो म्हें प्रशम सुधा संगान।।२।।

लघुता स्यूं प्रभुता प्रगटे है वास्तव में साक्षात्।
प्रणत नम्रता भक्तिभाव स्यूं प्रतनु कियो अभिमान।।३।।

तप्त तपोबल स्यूं जन-जन में पायो श्रद्धा-स्थान।
महाप्रज्ञ गुरुवर-शासन में अभिनव वर सन्धान।।४।।

लय : धन्ना रा जाया मगन.....

संदर्भ : दीर्घतपस्विनी साध्वी पन्नांजी स्मृति
लाडनूं, कार्तिक कृष्णा ९, सं. २०५७

६०

गण-उपवन री मन्दार साध्वी कमलू जी
गुण-रत्नां री भण्डार साध्वी कमलू जी
मृदुता मानो साकार साध्वी कमलूजी

आचार्यां री सेवा रो पहर्‍यो कंठा में हार।
साध्वी कमलू जी.....
सन्त सत्यां री परिचर्या काइं करता चित्त उदार।।१।।
साध्वी कमलू जी.....

कालूगणिवर श्रीचरणां पायो संयम सुखकार।
साध्वी कमलू जी.....
सतियां में अति दीपती वत्सलतामय व्यवहार।।२।।
साध्वी कमलू जी.....

धन्य-धन्य शासन गौरव धार्‍यो मंगल संथार।
साध्वी कमलू जी.....
दृढ़ शुभ भावां स्यूं मिले खुद भवसागर रो पार।।३।।
साध्वी कमलू जी.....

सदा रहे आत्मस्थता आत्मिक बल अपरम्पार।
साध्वी कमलू जी.....
अर्हम्-अर्हम् जप कर्‍यां प्रभुवर स्यूं जुड़ज्या तार।।४।।
साध्वी कमलू जी.....

हार्दिक मंगल भावना म्हें भावां बारम्बार।
साध्वी कमलू जी.....
सन्निधि गुरु महाप्रज्ञ री कहे 'महाश्रमण' जयकार।।५।।
साध्वी कमलू जी.....

लय : कोरो काजलियो.....

संदर्भ : अनशनस्थ शासनगौरव साध्वी कमलूजी के प्रति
बीदासर, सं. २०५८ आश्विन शुक्ला १०

आचार्य महाश्रमण : एक परिचय

आचार्य महाश्रमण उन महान संत-विचारकों में से एक हैं जिन्होंने आत्मा के दर्शन को न केवल व्याख्यायित किया है, अपितु उसे जीया भी है। वे जन्मजात प्रतिभा के धनी, सूक्ष्मद्रष्टा, प्रौढ़, चिंतक एवं कठोर पुरुषार्थी हैं। उनकी प्रज्ञा निर्मल एवं प्रशासनिक सूझबूझ बेजोड़ है। एक विशुद्ध पवित्र आत्मा जिनके कार्यों में करुणा, परोपकारिता एवं मानवता के दर्शन होते हैं तथा जिनकी विनम्रता, सरलता, साधना एवं ज्ञान की प्रौढ़ता भारतीय ऋषि परम्परा की संवाहक दृष्टिगोचर होती है।

१३ मई, १९६२ को राजस्थान के एक कस्बे सरदारशहर में जन्म एवं ५ मई, १९७४ को दीक्षित हुए आचार्य महाश्रमण अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ की परम्परा में तेरापंथ धर्मसंघ के ११वें आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

अध्यात्म, दर्शन, संस्कृति और मानवीय चरित्र के उत्थान के लिए समर्पित आचार्य महाश्रमण आर्षवाणी के साथ अध्यात्म एवं नैतिकता, अनुकंपा और परोपकार, शांति और सौहार्द जैसे मानवीय मूल्यों एवं विषयों के प्रखर वक्ता हैं।

वे एक साहित्यकार, परिव्राजक, समाज सुधारक एवं अहिंसा के व्याख्याकार हैं। आचार्य महाप्रज्ञ के साथ अहिंसा यात्रा के अनन्तर आपने लाखों ग्रामवासियों एवं श्रद्धालुओं को नैतिक मूल्यों के विकास, साम्प्रदायिक सौहार्द, मानवीय एकता एवं अहिंसक चेतना के जागरण के लिए अभिप्रेरित किया।

'चरैवेति-चरैवेति' इस सूक्त को धारण कर वे लाखों-लाखों लोगों को नैतिक जीवन जीने एवं अहिंसात्मक जीवन शैली की प्रेरणा देने के लिए पदयात्राएं कर रहे हैं।

अत्यन्त विनयशील आचार्य महाश्रमण अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान एवं अहिंसा प्रशिक्षण जैसे मानवोपयोगी आयामों के लिए कार्य कर तनाव, अशांति तथा हिंसा से आक्रांत विश्व को शांति एवं संयमपूर्ण जीवन का संदेश दे रहे हैं।

शांत एवं मृदु व्यवहार से संवृत्त, आकांक्षा - स्पृहा से विरक्त एवं जनकल्याण के लिए समर्पित युवा मनीषी आचार्य महाश्रमण भारतीय संत परम्परा के गौरव पुरुष हैं।

आचार्यश्री महाश्रमण की प्रमुख कृतियां

आओ हम जीना सीखें

जीता हर कोई है, किन्तु कलापूर्ण जीना कोई-कोई जानता है। प्रस्तुत पुस्तक में आचार्यश्री महाश्रमण ने कलात्मक जीवन के सूत्रों को प्रकाशित करते हुए जीवन की प्रत्येक क्रिया का व्यवस्थित प्रशिक्षण दिया है। वस्तुतः यह कृति 'कैसे जीएं' इस प्रश्न का सटीक समाधान है।

क्या कहता है जैन वाङ्मय

इस पुस्तक में जैन शास्त्रों में उपलब्ध सफलता के सूत्रों में से चुनिंदा मोतियों को पिरोया गया है। प्रस्तुत कृति आचार्यश्री महाश्रमण के हृदयस्पर्शी प्रवचनों का महत्त्वपूर्ण संग्रह है।

दुःख मुक्ति का मार्ग

आचार्यश्री महाश्रमण ने इस पुस्तक में साधना के रहस्यों को प्रस्तुत किया है। सुख, शांति और आनंद की प्राप्ति में यह कृति मार्गदर्शक की भूमिका अदा करती है।

संवाद भगवान से

प्रतिष्ठित जैनागम उत्तराध्ययन के २९वें अध्ययन पर आधारित इस पुस्तक में भगवान महावीर और उनके प्रमुख शिष्य गौतम के रोचक संवाद के माध्यम से मन में संशय पैदा करने वाले प्रश्नों को विस्तृत रूप में समाहित किया गया है। यह कृति दो भागों में उपलब्ध है।

महात्मा महाप्रज्ञ

युगप्रधान आचार्यश्री महाप्रज्ञ तेरापंथ के आचार्य, अनुशास्ता, साहित्यकार और प्रवचनकार थे। इन सबसे पहले वे एक सन्त थे, महात्मा थे, उनकी आत्मा में महानता थी। उनके उत्तराधिकारी आचार्यश्री महाश्रमण ने उन्हें नजदीकी से देखा और जाना। प्रस्तुत पुस्तक में श्री महाप्रज्ञ के नौ दशकों के इतिहास और रहस्यों को उजागर किया गया है।

रोज की एक सलाह

लघु आकार में प्रस्तुत यह पुस्तक 'गागर में सागर' उक्ति को चरितार्थ करती है। आचार्य महाश्रमण द्वारा सूक्तियों में दी गई 'रोज की एक सलाह' हर व्यक्ति के लिए प्रतिदिन की पर्याप्त खुराक है। सदा साथ रखी जा सकने वाली यह कृति न केवल सफलता की प्राप्ति में सहायक है, अपितु व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान में भी इसकी उपयोगिता असंदिग्ध है।

सुखी बनो

आचार्य महाश्रमण ने प्रस्तुत पुस्तक में श्रीमद्भगवद्गीता और उत्तराध्ययन की तुलनात्मक विवेचना करते हुए साधक का सुन्दर पथदर्शन किया है। जहां यह कृति दो महनीय ग्रन्थों को युगीन रूप में प्रस्तुति देती है, वहीं अध्यात्मरसिकों के लिए पोषक का कार्य भी करती है।

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं

आचार्यश्री महाश्रमण की प्रस्तुत पुस्तक में जैन तत्त्वज्ञान, साधना के प्रयोगों, महापुरुषों और उनके अवदानों आदि विविध विषयों से संबद्ध उपयोगी और प्रेरणास्पद सामग्री संजोई गई है।

शिलान्यास धर्म का

धर्म का आदि बिन्दु है - सम्यक्त्व। आचार्य महाश्रमण की प्रस्तुत कृति सम्यक्त्व, उसके लक्षण, दूषण, भूषण तथा देव, गुरु, धर्म आदि विषयों पर आधारित प्रवचनों और प्रश्नोत्तरों का संग्रह है। जैन अनुयायियों की आस्था के दृढ़ीकरण में यह कृति सहायक की भूमिका अदा करती है।

● प्राप्ति स्थान ●

जैन विश्व भारती

पोस्ट : लाडनूं-३४१३०६, जिला : नागौर (राज.)

फोन नं. : (०१५८१) २२२०८०/२२४६७१

ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com

आदर्श साहित्य संघ प्रकाशन